eebrothers.com, for detailed information on ayurveda books, visit our website www.jaypeebrothers.com, for detailed information on ayurveda books

संस्कृत परिज्ञान

प्रथम प्रश्न-पत्र

लेखक

आचार्य वैद्य ताराचन्द शर्मा

डॉ. छविकृष्ण आर्य (शास्त्री)

सहायक

वैद्य मनोज कुमार शर्मा

वैद्य अभिजीत शर्मा

JAYPEE

विषयानुक्रमणिका

क्रम संख्या		पृष्ठ संख्या
1.	संस्कृतवर्णानां परिचयः	1–3
	2.1. संज्ञाप्रकरण	4–6
	2.2. लोपसंज्ञा	7–10
3.	उपसर्गाः	11–12
4.	अव्ययानि	13–15
5.	कारक–परिचयः	16–39
6.	सन्धिः–प्रयोग	40–52
7.	समासज्ञानम्	53–61
8.	शब्दरूप एवं धातुरूप संग्रह	62–89
9.	धातु रूप	90–124
10.	प्रत्यय	125–137
11.	विशेषण–विशेष्य	138–139

अध्याय 3

उपसर्गाः

उपसर्गाः :-

''उपसर्गाः क्रियायोगे''

क्रिया के योग में 'प्र' आदि उपसर्ग संज्ञक होते हैं। उपसर्गों का प्रयोग सदा ही धातुओं के आरम्भ में होता है। यद्यपि उपसर्गों का स्वतन्त्र रूप से कोई अर्थ नहीं होता परन्तु धातु के साथ उपसर्ग का प्रयोग धात्वर्थ में परिवर्तन की शक्ति रखता है। इस प्रसङ्ग में एक श्लोक बहुत प्रसिद्ध है-

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहार संहार विहार परिहारवत्॥

अर्थात उपसर्ग धातु के अर्थ में बलात् परिवर्तन कर देता है। उदाहरण के लिए 'हृ' धातु का अर्थ चुराना या हरना है परन्तु उपसर्ग के योग से वह 'हृ' धातु का प्रहार शब्द में चोट पहुँचाने के अर्थ में, आहार में भोजन के अर्थ में, संहार, शब्द में संभालने अथवा विनाश अर्थ में, 'विहार' में भ्रमण अर्थ में तथा 'परिहार' शब्द में निराकरण के अर्थ में प्रयुक्त है। इस प्रकार एक 'हृ' धातु का उपसर्ग के योग से भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयोग होता है।

उपसर्ग 22 माने गये हैं- जो निम्न प्रकार हैं-

उपसर्ग	**उदाहरणार्थ शब्द**
1. प्र	प्रचुर, प्रभूत, प्रगति, प्रचार, प्राचार्य आदि।
2. परा	पराजय, पराभव, पराक्रम आदि।
3. दुस्	दुष्कर्म, दुष्प्रवृत्ति, दुश्शासन, दुस्सह।
4. अप	अपमान, अपावरण, अपराध।
5. सम्	सम्मान, सम्मति, सम्मार्जन
6. अनु	अनुकरण, अनुसरण, अनुभव, अनुदान
7. अव	अवनति, अवरोध, अवमूल्यन
8. निस्	निश्शेष, निष्काम, निस्सन्देह
9. निर्	निरपराध, निराकरण, निरादर

JAYPEE BROTHERS

10. दुर्	दुराचार, दुर्गुण, दुर्व्यसन
11. वि	विनाश, विलास, विलाप, विलीन
12. आङ्	आसमुद्र, आमरण, आजीवन
13. नि	निलीन, निदान, निवेश
14. अधि	अधियमुनम्, अधिकार, अध्यात्म
15. अपि	अप्यय, अपिधान, अपिहित, अपिच्छिल
16. अति	अत्याचार, अतिरात्रि, अतिशय
17. सु	स्वागतम्, सुधार, सुकृति, सुभाष
18. उत्	उत्थान, उत्साह, उन्नयन, उदासीन
19. अभि	अभिशाप, अभिमत, अभ्यङ्ग, अभ्युदय
20. प्रति	प्रतिदिन, प्रतिसप्ताह, प्रतिवर्ष, प्रतिछात्र
21. परि	पर्यावरण, परिसर, परिवार, परीक्षण
22. उप	उपाध्याय, उपाचार्य, उपेन्द्र, उपवास, उपनयन



JAYPEE BROTHERS

or detailed information on ayurveda books, visit our website www.jaypeebrothers.com, for detailed information on ayurveda books, visit our webs

संस्कृत परिज्ञान

प्रथम प्रश्न-पत्र

संस्कृत प्रथम प्रश्न-पत्र की विशेषता :-

- उपसर्गों का उदाहरण सहित परिचय।
- संज्ञा शब्दों की परिभाषा सूत्र सहित।
- सन्धि प्रकरण में इनके सूत्रों का वर्णन।
- आयुर्वेद सम्बन्धी रूप वर्णन।
- अव्ययानि-प्रत्येक के उदाहरण रूप वाक्य।
- उपपद विभक्तियों के उदाहरण।

आचार्य वैद्य ताराचन्द शर्मा, एम.डी. (आयुर्वेद), स्व. पं. रामदत्त जी शर्मा के सुपुत्र, मूल निवासी बिसाऊ, झुन्झुनू (राजस्थान) में उत्पन्न अपना प्रारंभिक अध्ययन समाप्त कर जयपुर में आयुर्वेद अध्ययन वैद्य मुरारी मिश्र जी एवं वैद्य रामकृष्ण जी ढण्ढ के सानिध्य में कर्माभ्यास करते हुए आयुर्वेदाचार्य उपाधि प्राप्त की, 1968 से 1978 तक जयपुर एवं हरियाणा के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन कराते हुए पदार्थ विज्ञान, शरीर रचना विज्ञान, आयुर्वेद का इतिहास एवं द्रव्यगुण विज्ञान आदि विषयों पर पुस्तकों का लेखन किया। 1980 में पंजाब विश्वविद्यालय पटियाला से एम.डी. आयुर्वेद की उपाधि प्राप्त कर दिल्ली के मूलचन्द हॉस्पिटल में वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी के पद पं. हरिदत्त जी शास्त्री एवं श्री मुकुन्दीलाल जी द्विवेदी के सानिध्य में आयुर्वेद विश्वकोश तैयार किया जिसका एक भाग "पन्चकर्म चिकित्सा विज्ञान" चौखम्बा से प्रकाशित हो चुका है। 1995 में वैद्य शिवकुमार जी मिश्र, पूर्व सलाहकार आयुर्वेद, भारत सरकार के निर्देशन में संकलन कार्य पूर्ण कर मूलचन्द से निवृत्ति लेकर 1995 से मॉडल आई हॉस्पिटल, लाजपत नगर में अधीक्षक आयुर्वेद विभाग के पद पर कार्य कर रहे हैं, साथ ही स्वतंत्र चिकित्सा भी कर रहे हैं।

आपके लेख लगभग 200 अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं तथा अनेक सेमीनारों में शोधपत्र वाचन भी किये हैं। आप दिल्ली के जाने-माने सिद्धहस्त नाड़ी चिकित्सक हैं। आपकी 35 पुस्तकें अब तक प्रकाशित हो चुकी है। केन्द्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान की पाँच पुस्तकोंः वैद्य मनोरमा, अभिनव चिन्तामणि, बृहत योग तरंगिणी, रसमन्जूषा, वैद्यक संग्रह का हिन्दी अनुवाद किया है। विगत 40 वर्षों से आप आयुर्वेद छात्रों में लेखक के रूप में प्रसिद्ध व्यक्तित्व के धनी हैं। आपको अनेक संस्थानों ने अनेक मानद उपाधियांः शताब्दी महर्षि, राजस्थान श्री, आयुर्वेद विश्व गौरव, आयुर्वेद महाप्रयाण प्रदान की है। वर्तमान में आप राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, दिल्ली के राष्ट्रीय गुरु एवं नि.भा.आयुर्वेद विद्यापीठ के अध्यक्ष हैं। राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ द्वारा आपको लाईफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड दिया गया है। अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, सरिता विहार, दिल्ली द्वारा टीचर्स-डे पर आपको सम्मान-पत्र दिया गया है एवं दिल्ली सरकार द्वारा "वरिष्ठ नागरिक सम्मान" से भी सम्मानित किया गया है।

Printed in India

Available at all medical bookstores
or buy online at www.jaypeebrothers.com



JAYPEE BROTHERS
Medical Publishers (P) Ltd.
EMCA House, 23/23-B, Ansari Road,
Daryaganj, New Delhi - 110 002, INDIA
www.jaypeebrothers.com

Join us on facebook.com/JaypeeMedicalPublishers

